नंदीवाला समाज की बोली का अध्ययन

डॉ. सविता कृष्णात पाटील
सहयोगी प्राध्यापक
स.ब. खाड़े महाविद्यालय, कोपार्डे
मोबाइल 9403552007
ई मेल savitapatil1965@gmail.com

सारांश

महाराष्ट्र में विमुक्त घुमंतू समुदाय की अनेक जमातियाँ हैं। इनमें नंदीवाला समाज की बोली को समाविष्ट किया गया है। ये लोग आँध्रप्रदेश के मूल निवासी हैं। हर गाँव, प्रदेश की अपनी एक भाषा होती है उसका एक अलग अस्तित्व होता है लेकिन आज इनमें आमूलाग्र परिवर्तन होने लगा है छोटी – छोटी जाति – जमातियों की बोलियाँ अपना रूप बदल रही हैं। शिक्षा, व्यवसाय, मीडिया, आर्थिक विकास, रोजगारों के कारण बढ़ता हुआ संपर्क के कारण कुछ ही सालों में ये बोलियाँ अपना अस्तित्व खो देने की आशंका में हैं। नंदीवाला समाज की बोली को सुरक्षित रखना तथा उसका संवर्धन करना महत्त्वपूर्ण बनता जा रहा है। नंदीवाला समाज के लोग सेंकडों वर्ष पहले आए हुए और तेलुगु भाषा बोलनेवाले हैं।

बीज शब्द – बोली, नंदीवाला, दंतकथा, विधि, संज्ञाएँ, क्रियाएँ, विशेषण, लिपि प्रदेयता, संवर्धन

प्रस्तावना

नंदीवाला समाज के लोग जीविकानिर्वाह के लिए भटकंती करते हुए जी रहे हैं। इस समाज के लोग पहले झोपड़ियों में रहते थे, अब वे छोटे-छोटे कच्चे मकान बनवाकर रहने लगे हैं। सजे हुए बैल, जिसे नंदीबैल कहा जाता है, उसे लेकर गाँव-गाँव घूमते थे। 'गुबु-गुबु' की आवाज के साथ 'गुबी' नामक वाद्य बजाकर नंदीबैल का खेल दिखाते थे।' इस साल बरसात होगी क्या', 'फसलें अच्छी आयगी क्या', 'सभी का स्वास्थ अच्छा रहेगा क्या' ? जैसे प्रश्न नंदीबैल से पूछे जाते थे और नंदीबैल अपनी गर्दन हिलाकर 'हाँ' या 'ना' कहते हुए प्रश्नों का उत्तर देते थे। नंदीबैल द्वारा कहा भविष्य सच होता है, ऐसी लोगों की धारणा रहती थी। स्त्रियाँ श्रद्धा से नंदीबैल के चरणों पर पानी डालकर उसका औक्षण करती थीं। साथ ही अनाज, पुराने कपड़ें, पैसे, रोटियां, बैल के लिए घास दिया जाता था।

बैल से नंदीबैल बनाने की भी विधि होती है। घर के गाय से उत्पन्न सुंदर बछड़े को नंदी बनाया जाता है। बछडा चार दाँतोंवाला बनने के बाद यह विधि होता है। उसे विशिष्ट हाव-भाव सिखाएं जाते हैं। पांच दिन नंदी की पूजा की जाती है और देवता के रूप में एक पीतल की प्रतिमा बैल के गले में बाँध दी जाती है। नंदीबैल के मालिक को कोड़ा, झूल, गुबी याने एक वाद्य और झोला दिया जाता है। विधिपूर्वक यह झूल बैल के पीठ पर चढाई जाती है। इस समाज के लोग काशी से गंगा नदी का जल बोतल से दक्षिण की ओर बेचते थे, इसीकारण इन लोगों को 'काशी कापड़ी' भी कहा जाता है। नंदीवाला समाज के लिए 'तिरमाली' और 'दासरा' नामों से भी पहचाना जाता है।

नंदीवाला समाज के प्रति एक किवदंती कही जाती है। इस समाज की कुलदेवता बालाजी है। ये लोग भीख मांगकर अपनी जीविका चलते थे। रात में मंदिर आकर सो जाते थे। उसी मंदिर में एक नाग हर रोज प्रात:काल में अपने मुँह एक दिव्य, तेजस्वी मणि लेकर आ जाता था। उसे देवता से सामने रखकर उसे प्रदक्षिणा करते हुए उस मणि को लेकर फिर चला जाता था। यह क्रम एक बहुत दिनों से चल रहा था। एक दिन इस समाज के लोगों के मन में आया कि अगर इस मणि को चुराकर सुनार को बेच दिया तो बहुत पैसे प्राप्त हो जाएँगे और अपनी गरीबी दूर हो जाएगी। उन्होंने मणि चुरा लिया और एक नाव में बैठकर सुनार के पास जाने लगे। इतने में नाव में 'फुस्स फुस्स' की ध्वनि सब बहुत घबरा गए और रक्षा के लिए बालाजी की प्रार्थना की। बालाजी ने केंचुएँ का रूप धारण कर नाग से इन लोगों की रक्षा की। इन लोगों ने यह मणि बालाजी के चरणों पर अर्पित कर दी। इनकी सच्चाई देखकर बालाजी प्रसन्न हुए और वरदान माँगने के लिए कहा। इस समाज के लोगों ने जीविका के लिए कुछ साधन देने के लिए कहा। इस पर बालाजी ने उन्हें एक (नंदी) बैल दिया। लोग नंदी की सहायता से लोकरंजन करते हुए अपनी जीविका चलाने लगे, एसिकार्न इन भिक्षुकों को नंदीवाला कहा जाता है। तेलुगु की बोली में इस जाति को 'गंगेइट' कहा जाता है।

नंदीवाला समाज की बोली भाषा -

प्रस्तुत शोधनिबंध में नंदीवाला समाज की बोली भाषा का अध्ययन किया गया है। मराठी भाषा की कुछ बोलियों का अनुसंधान और अध्ययन हुआ है। भाषा संबंधी सर्वेक्षण जॉर्ज ग्रीयरसन ने किया था। इसके बाद श्री. गणेश देवी जी का बोलियों के सर्वेक्षण, अध्ययन और संकलन में बहुत बड़ा योगदान है। बोलियों के अध्ययन में यह निश्चित ही मददगार बनेगा। नंदीवाला विमुक्त घुमन्तु जाति है। विमुक्त घुमन्तु, घुमक्कड़ जाति अंग्रेजी के Tribe' शब्द का पर्यायवाची है। Oxford Dictionary' में इस शब्द का अर्थ "a social group in a traditional society consisting of linked families or communities with a common culture and dialect."[1] मतलब यह कि समान संस्कृति और समान बोली होनेवाली परिवार संस्था जो एक पारंपरिक समाज या समुदाय से संबंधित रहती है।

डॉ. भोलानाथ तिवारी कहते हैं, " एक भाषा के अंतर्गत जब कई अलग – अलग रूप विकसित हो जाते हैं तो उन्हें बोली कहते है।"[2] मराठी भाषा के अंतर्गत ऐसे अनेक रूप विकसित हो गए, उनमें एक रूप नंदीवाला समाज की बोली है। यह समाज महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, कर्नाटक राज्यों में बिखरा हुआ है। शिक्षा तथा स्थानिक लोगों के संपर्क की वजह से ये लोग स्थानिक भाषा बोलते हुए दिखाई देते हैं परंतु घर परिवार,जात – पंचायत तथा गोपनीय व्यवहारों में बोली भाषा का ही उपयोग किया जाता है। "नंदीवाला समाज मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र और कर्नाटक आदि राज्यों में फैला दिखाई देता है। परिवार, जात पंचायत और गोपनीय बाहर के व्यवाहारों में उनकी बोली भाषा का उपयोग किया जाता है।"[3] महाजात पंचायत के मौखिक नियम, धार्मिक विधि, त्योहारों में गाए जानेवाले गीत, कथाएँ, कहावतें, मुहावरें आदि के लिए तेलुगु बोली भाषा का प्रयोग किया जाता है। सभी नाते – रिश्तों के लिए इस बोली भाषा में स्वतंत्र शब्द दिखाई देते हैं। माँ, दादी, दादा, परदादा, पिता से लेकर मौसी, ससुर, सास तक ये शब्द प्रयुक्त हैं।–

माँ, नानी, परनानी – अम्म, अम्मम, मुदिअम्मम

पिता, दादी, परदादा – तंडी, तंडीम, मुत्तातता

बड़े चाचा के लिए पेदनान्ना और चाची के लिए सिन्नमा छोटे चाचा के लिए चिन्नान्ना और छोटी चाची के लिए पिन्नमा कहा जाता है। वधु के लिए पोर्लिल कुतुरू और नियोजित पति के लिए पोलिलकोडूकु कहा जाता है। सास के लिए अत्तागारू और ससुर के लिए माम्मगारू कहा जाता है। पति के लिए मुगोडु और पत्नी के लिए पेंडलल्लामु जैसे शब्द प्रयुक्त हैं।

सप्ताह के दिवसों के लिए आदिवारमु, सोमवारमु, मंगलवारमु, बुधवारमु, गुरुवारमु, शुक्रवारमु और शनिवारमु आदि,

रत्नों के लिए वज्रमु , (हिरा) गोमेधिकमु (गोमेध), पुष्यरागमु (पुष्यराज) पच्च (पाचु), माणिक्यमु (माणिक), नीलममु (नीलम), मुत्युमु (मोती)जैसे नाम प्रयुक्त हैं।

धातुओं के रूप में बंगारमु (सोना), उककु (इस्पात), वेंडि (चाँदी), रागि (तांबा), इत्ताडे (पीतल), सत्तू (जस्ता) इतुमु (लोहा) जैसे शब्द प्रयुक्त हैं।

संख्या की दृष्टि से देखा जाए तो ओकटि, रुंडू, मुडू, नालगु जैसे शब्द आ गए है।

महीनों के रूप में चैत्रमु, वैशाखमु, जेष्ठमु, आषाढ़मु

ऋतुओं के रूप में ऐडाकालमु, वर्षाकालमु, शीतकालमु, वसंतऋतुमु, ग्रीष्म कालमु, वर्षाकालमु

गहनों के रूप में कमल्लु (बाली) लोककुलु (छोटा झुमका) गाजुलु (चूडियाँ) मट्टेलु (बिछिया) गोलुसु (जंजीर) आदि

दिशाओं के रूप में तूर्प, उत्तरमु, दक्षिणमु, वायव्यमु

अवयवों रूप में गोडळलु (नख), कळलु (आखें), चेवुलु (कान)

फूलों के रूप में गुलाबिपुव्वु, कनकाम्बरपुव्वु (अबोली), मोगलिपुव्वु (मोगरा)

फलों के रूप में कमलापंडु (संतरा), मामिडिपंडु (आम), निम्मपंडु (नीम), के रूप में प्रयुक्त हैं।

इन शब्दों को देखने के बाद समझ में आता है कि लगभग ये सभी संज्ञाएँ उकारांत याने स्वरांत हैं। नंदीवाला समाज की बोली में महाप्राण व्यंजन नहीं दिखाई देते ज्यादातर अल्पप्राण व्यंजन प्रयुक्त हैं, जिन्हें बहुत कम वायु प्रवाह से बोला जाता है। शब्द के अंत में लगाया जानेवाला अंतिम वर्ण 'मु' पर तेलुगु का प्रभाव लक्षित होता है। तेलुगु की तरह उकारांत शब्द ज्यादा है। महाप्राण व्यंजन कम याने न के बराबर होने के कारण इस समाज की बोली में कोमलता आ गई है। तेलुगु में 'लु' प्रत्यय लगाकर संज्ञा का बहुवचन किया जाता है। नंदीवाला समाज की बोली में ज्यादातर 'ल' प्रत्यय लगाकर बहुवचन बनाया जाता है। उदा. शम्बु (लोटा) – शम्बुल, पोय (चूल्हा) – पोयल

नंदीवाला समाज की क्रियाओं के संबंध में देखेंगे तो इस बोली की क्रियाएं हिंदी की तरह वियोगात्मक नहीं हैं। ये क्रियाएँ संस्कृत की तरह संयोगात्मक दिखाई देती है। क्रियाओं की दृष्टि से देखा जाए तो मराठी तथा हिंदी भाषा की तरह इस बोली में पदक्रम है, लेकिन उद्देश्य तथा कर्म के लिंग वचन के अनुसार क्रिया के लिंग वचन में अंतर नहीं आ जाता। क्रिया संबंधी कुछ बातें अंग्रेजी भाषा की तरह दिखाई देती है। उदा.

1 पिलगाड पदाम पाडता हुंदद – लड़का गाना गाता है।

2 पिल्ला पदाम पाडता हुंदद – लड़की गाना गाती है ।

उद्देश्य के लिंग में परिवर्तन करने पर क्रिया में कोई अंतर नहीं आया।

उसीप्रकार उद्देश्य के वचन में परिवर्तन करने पर भी क्रिया में कोई अंतर नहीं आता। उदा.

1 पिलगाड उर्रकता हुंदद – लड़का दौड़ता है।

2 आंदर पिलगाड उर्रकता हुंदद – लडके दौड़ते हैं।

विशेषणों के संबंध में कहा जाय तो नंदीवाला समाज की बोली में ज्यादातर मूलावस्था के विशेषण दिखाई देते हैं। समृद्ध भाषा की तरह उत्तरावस्था तथा उत्तमावस्था के विशेषण नहीं दिखाई देते। गुणवाचक, संख्यावाचक, परिमाणवाचक, व्यक्तिवाचक, प्रश्नार्थक आदि सभी प्रकार के विशेषण इस बोली में दिखाई देते हैं।

निष्कर्ष –

भारत जैसे बहुभाषी देश में अनेक बोलियाँ बोली जाती हैं। इन बोलियों में लोककथा, लोकगीत विपुल मात्रा में हैं। हमारी संस्कृति, संस्कार, आचार- विचार, व्यवहारों के दर्शन इनके द्वारा होते हैं। भाषा संस्कृतियों का अध्ययन टालकर मानवी संस्कृति का अध्ययन कठिन है। प्रागैतिहासिक संस्कृति के अध्ययन के लिए बोली के अध्ययन की नितांत आवश्यकता है। बोलियाँ अगर जीवित रहेगी तो प्रमाण भाषाएँ जीवित रहेगी। बोलियाँ इतिहास, परम्पराएँ और सामाजिक विकास का महत्त्वपूर्ण अंग हैं।

बोलियों के लिए न तो व्याकरण है, न तो लिपि। बोलियों के लिए लिपि प्रदेयता का कार्य होना आवश्यक है। लिपि प्रदेयता के साथ – साथ इन बोलियों का व्याकरण बनाना होगा। हमारे संस्कृति की धरोहर – लोकगीत, लोककथाएं सुरक्षित रखनी होगी। नंदीवाला समाज की बोली के अध्ययन के लिए अनुसंधान की विविध दिशाएँ हैं। उसे देवनागरी लिपि प्रदान करते हुए उसका व्याकरण बनाना होगा। प्रौद्योगिकी की सहायता से इनकी बोली तथा साहित्य को सुरक्षित रखना होगा। नंदीवाला समाज की बोली का कार्पस निर्माण का कार्य शुरू करना होगा। इन बोलियों के लोगों को शिक्षा, व्यवसाय के लिए प्रांतीय भाषाओं में व्यवहार करना पड़ता है। परिणामस्वरूप इन बोलियों में प्रांतीय भाषाओं के शब्द आ गए हैं। इनका मूल रूप दब रहा है। कई बोलियाँ नष्ट हो रही हैं। नंदीवाला समाज की बोली के संबंध में भी यही हो रहा है। इस समाज के लडके प्रांतीय भाषा की पाठशालाओं में पढ़ते हैं। अपनी भाषा का आपस में प्रयोग करते समय शर्म महसूस करते हैं। अगर दूसरा कोई इनकी बोली का अध्ययन करने लगा है तो उसे मदद करने में झिझकते हैं। अपने घर में ज्यादातर प्रांतीय बोली का प्रयोग करते हैं। जब तक इस समाज के लोग इस समाज की बोली के अध्ययन के लिए सामने नहीं आएँगे, तब तक इस अध्ययन के लिए सही दिशा नहीं मिल पाएगी और बोली के अध्ययन में विश्वासहार्यता नहीं आएगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1 Oxford Corpus Oxford English Dictionary, संस्करण 2000 पृ.1106

2 तिवारी भोलानाथ, भाषाविज्ञान, किताब महल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रस्तुत संस्करण 1991, पृ.78

3 चव्हाण बालासाहेब संतू – महाराष्ट्रातील नंदीवाले समाजाचे अंतरंग, ज्योतिचंद्र पब्लिकेशन, लातूर सं. 2012, पृ.48